कोचीन कस्टम्स न्यूज़ लेटर
COCHIN CUSTOMS NEWS LETTER

श्री पुल्लेला नागेश्वर राव, मुख्य आयुक्त

श्री सुमित कुमार, सीमाशुल्क आयुक्त

सम्पादक मण्डल

सुमित कुमार, भा रा से, सीमाशुल्क आयुक्त

एस अनिल कुमार, भा रा से- अपर सीमाशुल्क आयुक्त

श्री वी ए मोइदीन नैना, भा. रा. से. – सहायक सीमाशुल्क आयुक्त

रितेश कुमार सिंह- निवारक अधिकारी

परामर्शदाता

श्री पी टी चाको, उप निदेशक (रा भा) (सेवा निवृत्त)

वर्ष-1 अंक- 2

जुलाई, 2018

अपनी बात

प्रिय मित्रों,

कोचीन कस्टम्स डिजिटल न्यूज़ लेटर का जुलाई अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। डिजिटल रूप में यह पत्रिका का दूसरा अंक है और पिछले अंक के संबंध में प्राप्त प्रतिक्रिया से हमारा मनोबल ऊंच हुआ है। पत्रिका हमारे वेब साईट के अलावा फेस बुक, ट्विटर, विभिन्न व्हाट्स आप ग्रूप के माध्यम से हजारों लोगों तक पहुंचा है और कई सराहना के शब्द हमें प्राप्त हुए हैं। हमारे सीमाशुल्क गृह के भीतर और विभिन्न सीमाशुल्क स्टेशनों पर होने वाले प्रमुख घटनाओं से आप लोगों को अवगत रखना और सजग बनाए रखना हमारा उद्देश्य है।

सीमाशुल्क के कार्यकलापों में विस्तार हो रहा है, हाल ही में कुछ नए भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारियों ने कार्यभार ग्रहण किए हैं और आगामी दिनों में और भी अधिकारी शामिल होंगे। कर्मचारी चयन आयोग द्वारा चुने हुए कुछ अधिकारियों ने भी कार्यभार ग्रहण किए हैं और कुछ आने वाले हैं, इस प्रकार हमारी संख्याबल में निरंतर वृद्धि हो रही है।

हाल के दिनों में हमारे पोस्टल अप्रैसिंग विभाग में डाक द्वारा ड्रग्स भेजे जाने के संबंध में इस वर्ष अब तक 18 मामले प्रकाश में आये हैं, जिसमें कोकीन, कोकीन की गोलियां, मेस्कालाइन, केनाबीस के पाउडर, मोर्फीन, एल एस डी के स्टैम्प, हशीश आदि शामिल होने की रिपोर्ट आई है। इस संबंध में हमारे कर्मठ अधिकारियों को चौकन्ना रहना होगा। इस संबंध में रिपोर्ट आगे के पृष्ठों में देखे जा सकते हैं।

नए नए तरीके अपनाकर सोने की तस्करी जारी है और लागातार जब्ती भी हो रही है। कभी उसे तरल रूप में कभी जूते के सोल के रूप में और कई नई तरीकों से तस्करी की कोशिशें हो रही है। लेकिन एयरपोर्ट में तैनात हमारे कर्मठ अधिकारी उन सभी तरीकों को मात दे रहे हैं।

अभी हाल में माल एवं सेवा कर की धन वापसी को सुगम बनाने के लिए और निर्यातकों और आयातकों को देय रकम का भुगतान करने के लिए 'जी एस टी धनवापसी पखवाड़ा' आयोजित किया गया है।

इस सीमाशुल्क गृह की प्रशासन एवं स्थापना अनुभाग को हाल के दिनों में काफी दबाब में काम करना पड रहा था, क्योंकि "एम्प्लॉईस इन्फोर्मेशन सिस्टम" नामक एक नए इंटरफेस से अधिकारी बहुत परिचित नहीं थे। लेकिन अधिकारियों की मेहनत और कुशलता से समय पर सभी कार्य निपट गए। ये विभाग अब भी अधिकारियों की कमी से जूझ रही है।

यह डिजिटल पत्रिका लगातार प्रकाशित होता रहे, इसके लिए आप सभी की सहयोग की अपेक्षा है। आपकी रचनाओं की हमें जरूरत है, ताकि यह केवल समाचार ही बनकर न रह जाये। वर्ष के दौरान प्रकाशित सबसे अच्छी रचना के लिए पुरस्कार दिये जाने का भी विचार है।

इस अंक के संबंध में अपने विचारों और प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएं। सहयोग की प्रतीक्षा में।

आपका

सुमित कुमार, भा रा से.

सीमाशुल्क आयुक्त

Postal Appraising Department seizure Narcotics Drugs

The Postal Appraising Department of the Customs, Cochin seized narcotics drugs sent through post parcels. This year about 18 cases were found by the officers posted in the PAD and seized all the articles. In the seized drugs there is Cocaine in powder and tablets, Mescaline, cannabis powder, morphine powder, LSD stamps, hashish bar and cannabis.

Due to alertness of the officers, such incidents are now in a decreasing trend.

Smugglers are applying new modus operandi for gold smuggling.

IN a recent incident in Cochin International Airport more than a kilo of gold seized from a passenger of Kozhikode Dubai flight. The gold was mixed with some chemicals or starch and made it in a semi solid cake form or a paste. Such new modus operandi is now adopted by smugglers to smuggle gold in to the country. In this case, about 1260 grams of semisolid gold was concealed in between the soles of the shoes. The alertness of the officers of the Air Intelligence Unit intercepted the passenger and seized the gold.

सीमाशुल्क गृह में अधिकारियों के लिए राजभाषा नीति, यूनिकोड और डिजिटल अनुवाद पर प्रशिक्षण सम्पन्न

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उदघाटन करते हुए अपर महा निदेशक श्री मैथ्यू जोली

जुलाई, 2018 माह के 9 और 10 तारीख को सीमाशुल्क के अधिकारियों के लिए केंद्र सरकार की राजभाषा नीति, बहुभाषी कंप्यूटर प्रोग्राम यूनिकोड, डिजिटल अनुवाद और डिजिटल डिक्शनरी आदि पर कंप्यूटर प्रोग्राम दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

प्रशिक्षण का उदघाटन नासिन, कोचीन कैंपस के अपर महा निदेशक श्री मैथ्यू जोली ने किया। कार्यक्रम में विभिन्न श्रेणी के 22 अधिकारियों ने भाग लिया और कार्यक्रम का संचालन श्री पी टी चाको, सेवा निवृत्त उप निदेशक ने किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते हुए अधिकारीगण

NEW OFFICERS JOIN IN CUSTOMS

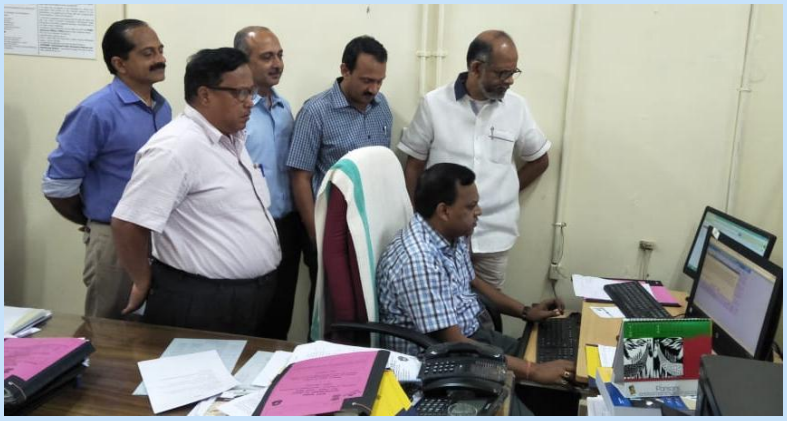

Newly promoted IRS officers getting introduced to thin client systems

Recently a few number of officers in various cadre joined the Customs. In this batch there are ... officers in the rank of Assistant Commissioners and ....11 officers in the rank of Inspectors. All these officers will be trained through NACIN and will be posted at various Customs Stations.

In the meanwhile 3 officers in the rank Deputy/ Asst. Commissioners posted in this Custom House were transferred to other Customs and Central Excise formations.

Recently NACIN, Cochin Campus organized a "Mandatory Training for Administrative Officers" for the newly promoted Administrative Officers of this Custom House. 6 officers attended the course from 2.7.18 to 13.07.2018.

Newly promoted Administrative Officers with Officers of NACIN

Implementation of new interface "Employees Information System" in Administration and Establishment.

A new interface "Employees Information System" has been recently introduced in the Administration and Establishment Section of this Custom House. This interface is introduced for performance of salary bills and for disbursing other payments of bills to the employees. It is not an easy job for handful of officers working in these sections to handle the large amount of data related to more than 400 employees working in various Custom Stations. Both these sections are facing acute shortage of staff.

Shri. M R Hajong, Asst. Commissioner (Admn I& Estt.) with his staff

Due to newly introduced interface, a large amount of data is to be entered in to the computer system. These sections are taking due care in avoiding circumstances that lead to delay in payment of Salary. Another major hurdle prevailing is huge backlog of transfer allowances bills, LTC bills, children Education Allowance, Uniform allowance etc. But in spite of shortage of staff and other hiccups, there were no incidents of delay of salary. Officers of these sections performed a commendable job in clearing a large number of bills by putting an extra mile of effort in clearing the pendency along with current bills. All kind of office expenditures, procurement etc. are carried out by these sections in addition to many other jobs entrusted to them.

World Environment Day celebrated in Cochin Customs

World Environment Day was celebrated with distribution of sapling and planting by staff and children of staff members. All senior officers participated actively in the event.

Enthusiastic participation by children was encouraging. Each planted sapling was dedicated to a group of children, who care for them since then. Banner used for the program was made of cloth.

To raise awareness about this year's theme of World Environment Day staff of Custom House, Cochin arranged a programme of "Plogging", wherein staff members picked up plastic waste while going for a group morning walk.

We also invited Shri Das Sreedharan of "Rasa Gurukul" fame for a speech on "food philosophy and sustainability". He emphasised on leading lives in consonance with nature.

Staff members were invited to share their contribution towards environment protection for recognizing and appreciating their efforts at department level.

इन हाउस डिजिटल मैगजीन "कोचीन कस्टम्स न्यूज़ लेटर" 29 जून को लॉंच किया गया।

इन-हाउस प्रकाशन के लिए पेपर के उपयोग को कम करने के लिए कर्मचारियों के योगदान से डिजिटल रूप में "कोचीन कस्टम्स न्यूज लेटर" नामक डिजिटल पत्रिका का प्रकाशन फिर से आरंभ किया। सीमा शुल्क आयुक्त श्री सुमित कुमार भा रा से ने खचा-खच भरे सीमाशुल्क गृह के

डिजिटल न्यूज़ लेटर को लॉन्च करते हुए

ई डी आई हॉल में 29.06.2018 को पहली ई-पत्रिका जारी की। यह पत्रिका सीमा शुल्क गृह, कोचीन के आधिकारिक वेब साइट, ट्विटर और फेस बुक आदि पर उपलब्ध रहेगी। इसके अलावा व्हाट्सएप के माध्यम से सभी अधिकारियों और उनके परिवार के सदस्यों को प्रसारित किया जाएगा।

SEMINAR ON "BEATING PLASTIC POLLUTION"

To implement cut in use of paper for in-house publication, we have relaunched "Cochin Customs News Letter" in digital format, with sole contribution by staff members. We also initiated use of digital banner for seminars and speeches.

SEMINAR ON "BEATING PLASTIC POLLUTION"

To further awareness about "Beating Plastic Pollution" Custom House, Cochin organised a seminar on the theme. Er. Baburajan P.K, Senior Environment Engineer, Kerala State Pollution Control Board and eminent social activist Shri Bharat M. Khona, who is providing eco friendly solution to plastic carry bag shared their views.

In the seminar, both pros and cones of plastic was discussed by Shri Baburajan P.K.. He also threw lights on recycling and alternatives of burning organic waste. Shri Khon introduced an alternate to plastic carry bags, a bag made of starch which be reused as well as can be disposed without any harm to the environment. The conference was inaugurated by the Commissioner shri Sumit Kumar, IRS and attend by large number of officers.

To propagate message of environment protection and healthy living in fun-filled manner, Custom House, Cochin also organised a programme "Football Fever".

Special GST Refund Fortnight in Custom House.

Shri. M S Suresh, Asst. Commissioner guiding and sensitizing Exporters

A special GST refund fortnight is being organized in this Custom House along with all other GST formations under CBIC from 16th to 30th July, 2018. During this ongoing fortnight near about 1800 claims of GST returns were settled and an amount of 32 crores were refunded to the exporters.

Shri. M S Suresh IRS, Asst. Commissioner is manning a help desk in collaboration with Federation of Import and Export organizations every day from 4.00PM to 6.00PM in which exporters are guided and sensitized on various errors committed by exporters at the time of filing shipping bills and GST returns.

नीलकुरिंजी (बारह वर्ष में एक बार खिलने वाला फूल)

लेख: श्री पी टी चाको, परामर्शदाता

कुरिंजी या नीलकुरिंजी जिसका वैज्ञानिक नाम स्ट्रोबिलियांतस कुंतियानूस है, नीलगिरी की पहाड़ियों और दक्षिण भारत के पश्चिमी घाट के शोला जंगलों में पाये जाने वाला एक पौधा है, जो बारह वर्ष में एक बार पुष्पित होता है। लिखित इतिहास के अनुसार 1838, 1850, 1862, 1874, 1886, 1898, 1910, 1922, 1934, 1946, 1958, 1970, 1982, 1994 और 2006 में इन पौधों में फूल लगने का वर्णन मिलता है। इसके अनुसार 2018 में यह फूल लगेगा और उसके बाद इसका दर्शन वर्ष 2030 में ही संभव हो सकेगा।

कुछ मामलों में यह भी देखा गया है कि कुछ पौधे 7 वर्ष में एक बार पुष्पित होते हैं, और उसके बाद वे मर जाते हैं, उसके बाद उसके बीज जीवन मृत्यु के चक्कर में वर्षों इंतजार करती रहती है।

तमिलनाडू के पलियन नामक आदिवासी गोत्र इन फूलों के खिलने से अपने उम्र का हिसाब लगाते हैं। कुरिंजी समुद्र तल से 1300 से लेकर 2400 मीटर की ऊंचाई पर उगने वाला एक पौधा है, जो एक फीट से लेकर दो फीट तक बढ़ते हैं। कुछ पौधों को 4 फीट तक तक बढ़ने का भी वर्णन मिलता है। यह ऐसे परिवार से संबंध रखने वाला एक पौधा है, जिसकी लगभग 250 प्रजातियाँ देखी गई है, और उनमें से लगभग 46 प्रजातियाँ भारत में पाई जाती है।

किसी समय में नीलगिरी के पहाड़ों और पलनी पहाड़ों पर इसके फूल नीली कालीन की तरह छाई रहती थी, इस समय उन स्थानों पर चाय और मसालों की कृषि की जा रही है। पश्चिमी घाट के अलावा नीलकुरिंजी केरल के पूर्वी घाट के शेवोरोयस, इडुक्की जिले के आनमलई, पालक्काड के अगली पहाड़ियों और कर्नाटक के बेल्लारी जिले के संदूरु पहाड़ियों में देखी गई है। 12 वर्षों के अंतराल के बाद पिछली बार वर्ष

2006 में केरल और तमिलनाडु में फिर से नीलकुरिंजी पुष्पित हुए। उसके बाद कुरिंजी के फूलों की एक और प्रजाति को वर्ष 2016 में उधगमंडलम में एक प्रमुख सड़क के पास खिली देखी गई।

केरल के इडुक्की जिले के कुरिंजिमला अभयारण्य कोट्टकम्बूर और वट्टावाड़ा गांवों के लगभग 32 किमी क्षेत्र में कुरिंजी संरक्षित है। कुरिंजी संरक्षण परिषद कुरिंजी के पौधों और उसके आवास व्यवस्था के संरक्षण के लिए विभिन्न अभियान और कार्यक्रम आयोजित करते हैं। हिंदू धर्म के भगवान कार्तिकेय को समर्पित तमिलनाडु के कोडाईकनाल में स्थित कुरिंजी आँड़वर मंदिर भी कुरिंजी के पौधों को संरक्षित करने का कार्य करते हैं।

तमिल के विभिन्न साहित्यिक रचनाओं में भी कुरिंजी के विवरण देखे जा सकते हैं। 1940 में प्रकाशित क्लारी फ्लिन रचित एक ऐतिहासिक अंग्रेज़ी उपन्यास 'Kurinji Flowers' में कुरिंजी के फूलों को एक दुखद प्रेम कहानी के रूप में चित्रित किया गया है।

पौराणिक नीलकुरिंजी के फूल खिल रहे हैं।

12 वर्षों की लंबी प्रतीक्षा अब खत्म हो गई है! केरल के इडुक्की जिले में स्थित मुन्नार की पहाड़ियां बहुत जल्द स्वप्निल नीले रंग की कालीन से ढकने वाली है। यदि उस नजारे को इस वर्ष न देख पाये तो वर्ष 2030 में ही देख सकेंगे। इसे देखने के लिए बिलकुल सही समय इस वर्ष के अगस्त से लेकर अक्तूबर तक की है।

हर बारह वर्ष में एक बार मून्नार की पहाड़ियाँ स्वप्निल नीले रंग से रंग जाती है जो यहाँ आने वाले

सैलानियों को एक जादू भरे वातावरण में ले जाती है। दूर दूर तक आसमान को छू रही पहाड़ियों जब स्वप्निल रंग की नीले फूलों वाली कालीन से बिछ जाती है तो एक जादूई दुनिया बन जाती है और यहाँ पर आने वाले सैलानी उस नजारे और यादों को लेकर लौटते हैं और अगले बारह वर्ष तक उन फूलों के खिलने का इंतजर करते रहते हैं। उस प्रेमी युगल की तरह जो बारह वर्ष बाद मिलने का वादा कर एक दूसरे से बिछुड़ जाते हैं। अब यह इंतजार खत्म होने को है, बस महीने भर के बाद आपका स्वप्निल दुनिया लौटने वाली है।

भले ही वनस्पतिविद इसे स्ट्रोबिलियांतस कुंतियानूस का खिलना कहे, या नीलकुरिंजी का खिलना। स्थानीय भाषा में नीला का अर्थ है नीला रंग और कुरिंजी का अर्थ है फूल। इस ऐतिहासिक घटना को इस वर्ष के अगस्त से लेकर अक्तूबर तक के तीन महीनों के बीच देखा जा सकता है जब फूल अपनी सारी खूबसूरती के साथ एक अद्भुत नजारा प्रस्तुत करेगी। मून्नार भ्रमण का सबसे अच्छा समय भी यही समय होता है, जब नीलकुरिंजी बड़े पैमाने पर खिलकर सपनों की दुनिया जैसे वातावरण तैयार करती है।

आसमान छू रही इन पहाड़ियों पर रहने वाली लुप्तप्राय नीलगिरी तहार नामक पहाड़ी बकरियों बादलों के बीच नीलकुरिंजी के स्वप्निल फूलों से आच्छादित पहाड़ियों से जब ये राजसी तहार नीचे उतार आती है तो यह नजारा एक अत्यंत रहस्यमय नजारा जैसा लगता है।

आम सैलानियों के लिए यह एक खूबसूरत नजारा भर मात्र हो सकता है, लेकिन इस दौरान वनस्पति विज्ञानी इस पौधे का यह अद्वितीय जीवन चक्र को देखने और अनुसंधान व आध्ययन के लिए आते हैं।

यह बारह वर्ष के बाद ही क्यों खिलती है?

कुछ पौधे सालाना और बारहमासी होते हैं। सालाना पौधे एक वर्ष में अपने जीवन चक्र को पूरा करते हैं। वे बीज से उगते हैं, खिलते हैं और बीजों को पैदा करते हैं और उसके बाद मर कर मिट्टी में मिल जाती है। कुछ पौधे द्विवर्षीय होते हैं और दो वर्ष से अधिक समय तक जीवित रहते हैं और आमतौर पर उसमें हर वर्ष फूल और फल लगते हैं और बीजों को पैदा करते रहते हैं। इन बीजों से उनकी अगली पीढ़ी पैदा होती है और यही चक्र दोहराते रहते हैं। इन पौधों को वनस्पति विज्ञान की भाषा में मोनोकार्पिक कहा जाता है। इसके उलट पॉली कार्पिक पौधे अपने जीवनकाल में कई बार फूलते और फलते हैं और कई बीज तैयार करते हैं।

मोनोकार्पिक पौधे परिपक्वता प्राप्त करने के बाद ही फूलते और फलते हैं। इसकी विभिन्न प्रजातियों द्वारा लिए जाने वाले समय में फर्क हो सकता है।

बम्बू या बांस एक मोनोकार्पिक पौधा है, जो परिपक्व होने और फूलने के लिए 40 से अधिक वर्षों का समय लेती है और इसकी एक और विशेषता यह है कि जब यह पुष्पित होता है तो एक समूह में एक साथ पुष्पित होता है। बांस और कुरिंजि के मामले में भी यही होता है। इस तरह के पौधों को पौध विज्ञानी 'प्लीटसीयल्स'(plietesials) कहते हैं।

कुरिंजी की विभिन्न प्रजातियाँ परिपक्व होने के लिए अलग अलग समय लेती है और उसके फूल भी अलग अलग समय पर लगते हैं। नीलकुरिंजी का समय चक्र इस प्रकार 12 वर्षों का होता है और यह 12 साल के समय में परिपक्व होकर एक साथ खिल उठते हैं और दर्शकों के लिए एक अद्भुत और स्वप्न समान नजारा प्रस्तुत करते हैं।

साभार: विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर तैयार लेख।

चित्र: www.keralatourism.org के सौजन्य से।

Oh Mother!

I sigh
Very often, as I lean,
the pillows of memory
prop against, I miss you.

Miles of life cleft us
time barred, you,
barred by time,
Ican't reach you, I feel you.

I stand, Life pours out
Still are you, Still am I.
Fragrant roses
Your heart in me.

Doves of love
Your sweet smiles
They sit upon,
My lingering lawns
Temple bells
Wake up you in my dwells.
Your fond songs
Your rich smells
Your gentle hugs
You don't die, I life you
My life are you.

I love you
Your fur touches
Simple melodies to me
Your love chords
Tie my urges into words
You in, I flute born
You not, I notes gone.

They call you "love"
amazing wow;
They call you "God"
Face of Now;
They call you "Divine"
Wine of life-brine.

Life is ticking away,
sun hopes dawns up
night soaks with dews sad
my life dear and cheer

age is icing, days mushrooming,
present snowflakes into past
future into present vanishes past
yet,
your sweet face smiles alive.

Poem : Smt.N Lalitha
Supdt.of Customs (IAD)

अगले कुछ ही वर्षों में मौत 'वैकल्पिक' हो जाएगी और उम्र बढ़ने का इलाज संभव होगा।

लेख: पी टी चाको, परामर्शदाता

स्पेनिश मूल के वैज्ञानिक लुइस कॉर्डिरो और सिम्बियन' नामक ऑपरेटिंग सिस्टम के संस्थापक कैम्ब्रिज के गणितज्ञ डेविड वुड ने हाल ही में प्रकाशित एक पुस्तक में इस बात की ओर इशारा किया है कि अगले कुछ वर्षों में ही मृत्यु वैकल्पिक हो जाएगी और उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को इलाज से रोका जा सकेगा। दोनों वैज्ञानिक जनितक विज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत है और उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तक का नाम है “The Death of Death”.

उनका यह भी मानना है कि विज्ञान जिस तेजी से विकास कर रहा है, उससे यह बहुत ही जल्द संभव हो जाएगा। अब से मानव केवल दुर्घटनाओं से ही मरेंगे न कि बीमारी या बुढ़ापे से। उन वैज्ञानिकों का कहना है कि बुढ़ापे को अब एक बीमारी समझकर उसका इलाज किया जाने लगेगा।

पुस्तक की प्रस्तुति के दौरान जेनितक इंजीनियरों ने कहा कि इस क्षेत्र में कुछ नई जेनेटिक हेर फेर तकनीकों के साथ नैनो टेक्नोलॉजी की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होगी। इस प्रक्रिया में खराब कोशिकाओं को अच्छी कोशिकाओं से बदला जा सकेगा और शरीर से मृत कोशिकाओं को हटाया जाएगा, क्षति ग्रस्त कोशिकाओं की मरम्मत की जाएगी, स्टेम कोशिकाओं से उपचार किया जाएगा और महत्वपूर्ण अंगों की 3 डी प्रिंटिंग की जाएगी।

संयुक्त राज्य अमेरिका में मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में कार्यरत जनितक इंजीनीयर (एमआईटी) कॉर्डिरो का कहना है कि उन्होंने'मौत को अब तक चुना नहीं है' और अगले 30 वर्षों में वह अब से छोटे उम्र का दिखेगा।

वैज्ञानिकों का कहना है कि उम्र बढ़ने की प्रक्रिया डीएनए की वजह से होती है, जिसे क्रोमोसोम में 'टेलोमेरेस' कहा जाता है- जिसमें से लाल रक्त कोशिका और यौन कोशिकाओं को छोडकर शेष कोशिकाओं में 23 जोड़े होते हैं, जो समय के साथ साथ छोटे होते जाते हैं, और उससे उम्र बढ़ने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है।

समय के साथ टेलोमेरेस क्षतिग्रस्त हो जाते हैं और छोटा होते जाते हैं, जिससे शरीर में विषाक्त पदार्थों का प्रवेश तेज हो जाता है, धूम्रपान, शराब का सेवन और वायु प्रदूषण आदि ऐसे तत्व है, जो टेलोमेरेस को नुकसान पहुँचाते हैं और इस प्रकार वृद्धावस्था में तेजी आती है।

कॉर्डिरो और वुड का मानना है कि अगले 10 वर्षों के भीतर कैंसर जैसी बीमारियों का पूरा इलाज संभव हो जाएगा और Google जैसे प्रमुख अंतरराष्ट्रीय कंपनी दवा के क्षेत्र में प्रवेश करेंगे क्योंकि वे समझते हैं उम्र बढ़ने का इलाज संभव है।

मशहूर बहुराष्ट्रीय कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने पहले से ही एक क्रियोप्रिसर्वेशन सेंटर की स्थापना की घोषणा की है जिसमें वैज्ञानिक अगले 10 वर्षों के भीतर कैंसर को पूरी तरह से इलाज योग्य बनाने की संभावनाओं पर शोध कर रही है।

इंजीनियरों ने इस बात को भी समझाया कि लोगों को आम तौर पर यह पता नहीं है कि कैंसर की कोशिकाएं अमर हैं, जबकि वर्ष 1951 में ही यह पता चल गया था। जब हेनरीएटा लैक नामक एक महिला, जो गर्भाशय के कैंसर से मर गई थी, के ट्यूमर को डॉक्टरों ने निकालकर रख लिया था और आज भी वह कैंसर की कोशिकाएं जीवित है।

वैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि 'अमर' रहने का यह अर्थ नहीं है कि धरती पर लोगों की भीड़ लग जाएगी। वैज्ञानिक मानते है कि पृथ्वी पर और अधिक लोग रह सकते हैं। क्योंकि लोग आजकल उतने बच्चे पैदा नहीं कर रहे हैं, जितने पहले किया करते थे। इसके अलावा आने वाले समय में अंतरिक्ष में भी घर बसाना संभव हो जाएगा।

वैज्ञानिक कॉर्डिरो का यह भी कहना है कि यदि जापान और कोरिया के लोग बच्चे कम पैदा करने की अपनी वर्तमान प्रवृत्ति को जारी रखते हैं तो आने वाली दो सदियों में उनकी प्रजातियाँ खत्म हो जाएगी, यानि 200 वर्ष के बाद धरती पर कोई जापानी या कोरियन नहीं रहेंगे।
कॉर्डिरो यह भी कहते हैं कि इस नई तकनीक से जापान और कोरिया के लोग धरती पर जीते रहेंगे और वे युवा बने रहेंगे। उन्होंने इस तकनीक की तुलना स्मार्ट फोन से करते हुए कहा कि 'शुरू शुरू में यह महंगी होगी, लेकिन बाजार में प्रतिस्पर्धा के चलते यह सस्ती हो जाएगी और सभी की पहुँच में रहेगी। तकनीकें पहले महंगी और मामूली होते हैं और बाद में बेहतर और सस्ती हो जाती है।

वैज्ञानिकों ने यह भी खुलासा किया कि वे पिछले दो वर्षों से इस तकनीक को गैर कानूनी तरीके से कोलम्बिया में प्रयोग कर रहे है, जहां जनितक छेड़छाड़ (genetic manipulation) के क्षेत्र में इस तरह के प्रयोग पर बहुत कम नियंत्रण होते हैं।

एलिज़ाबेथ पैरिश नामक एक महिला पर उम्र घटाने की चिकित्सा आरंभ की गई। वुड का कहना है कि उसका उपचार 'बहुत जोखिम भरा और अवैध भी है', लेकिन अब तक बिना कोई प्रतिकूल प्रभाव के सब कुछ सही चल रही है, और अब उसके खून में टेलोमेरेस का स्तर पहले के मुक़ाबले 20 वर्ष युवा दिखने लगी है, यानि वह अपने सही उम्र से 20 वर्ष कम की लग रही है।

वुड ने अंत में यह भी कहा कि वह चाहता है कि स्पेन इस प्रकार के तक्नोलोजी में अपना स्थान बनाए रखे और दुनिया में यह साबित करे कि स्पेनिश वाले भी अनुसंधान के क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। बस अब तक लोगों को उसके बारे में पता नहीं है।

इंटरनेट से प्राप्त विभिन्न लेखों के आधार पर तैयार
(चित्र: विभिन्न स्रोतों की सौजन्य से)
साभार :news@thinkspain.com @thinkspain)

* * * * * * * * * * *